# भारत में आर्थिक पुनर्निर्माण संबंधी डॉ.भीमराव अम्बेडकर एवं महात्मा गाँधी के विचार : एक तुलनात्मक अध्ययन

**कमल किशोर मंडल**

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में गांधी जी व डॉ.अम्बेडकर ने जातिवादी मानसिकता व जाति व्यवस्था को भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण के मार्ग में सबसे बड़ा बाधा बताकर इस व्यवस्था पर जोरदार प्रहार करना प्रारंभ किया। किन्तुगांधीजी एवं डॉ.अम्बेडकर के विचारों में गहरा फासला था, दोनों ही विद्वान थे, दोनो ही विद्वान, अपने समय के पहरेदार एवं पश्चिमी शिक्षा प्राप्त थे। इनकी सोच अलग–अलग थी किन्तु समस्या एक ही थी निदान भिन्न थे। दोनों ही विभूतियां अस्पृश्यता को मिटाना चाहते थे, असमानता एवं आर्थिक असमानता को समाप्त करना चाहते थे किन्तु अपने–अपने तरीकों द्वारा जहां गांधी जी की नजर में जाति व वर्ण में कोई बुराई नहीं थी तथा इनको बनाये रखने के पक्ष में थे, वे अस्पृश्यता को बुरा मानते थे और इसके लिए सम्पूर्ण जाति व्यवस्था को समाप्त करना उचित नहीं समझते थे। वहीं डॉ.अम्बेडकर की नजर में जाति में ऐसा कुछ नहीं है जो इसे बनाये रखा जाए।